नया मैदान, नये रास्ते

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग ११ | सम्पादक – प्यारेलाल | अंक ९

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ३० मार्च १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

मछलीगिरी — अेक बुनियादी दस्तकारी

[श्री मांजरेकर अेक अैसे शिक्षक हैं जिन्होंने क़ौमी तालीमके मक़सदके पीछे अपनी ज़िन्दगी लगा दी है। वे बुनियादी तालीममें गहरी दिलचस्पी रखते हैं। यहाँ अुन्होंने जो सुझाव पेश किया है, अुसपर समुन्दर किनारेवाले भागोंके स्कूलोंको ध्यान देना चाहिये। मछलीगिरीको दस्तकारी नहीं कहा जा सकता, लेकिन यही विरोध खेतीके बारेमें भी अुठाया जा सकता है। खेती और मछलीगिरी दोनों ही अैसे बुनियादी धन्धे हैं, जिनके बिना अिन्सान टिक नहीं सकता। बुनियादी तालीमके पाठ–क्रम (निसाब) में जो विषय शामिल किये गये हैं, अुनमें से क़रीब-क़रीब सारे विषयोंका सम्बन्ध अिन दोनों धन्धोंसे बहुत अच्छी तरह जोड़ा जा सकता है।

लेखकने यह शक ज़ाहिर किया है कि मछली पकड़नेका महात्माजीके अहिंसाके अुसूलके साथ मेल बैठ सकता है या नहीं।

बेशक अहिंसाका मतलब है कि सारे जीवोंके लिअे पूजाकी भावना रखी जाय। अहिंसाका पुजारी सारे जीवोंकी अेकता और पूजाकी भावनाकी कोअी हद नहीं बाँधेगा। लेकिन बातकी बातमें हम अपनी खान-पान वग़ैराकी आदतें नहीं छोड़ सकते। सारी मनुष्य-जातिने शाकाहार (फल-सब्ज़ी वग़ैरा खाने) के अुसूलको चाल-चलनके क़ानूनके तौरपर नहीं माना है। अगर लोगोंको अपनी ख़ुराकसे मांस या मछलीको निकाल देना पड़े, तो लाखों-करोड़ों आदमी भूखों मर जायँ।

अहिंसाका अुसूल, जैसा कि वह आज दुनियाके सामने रखा गया है, अिन्सानोंके सारे सम्बन्धोंसे हर तरहकी हिंसाको निकाल फेंकना चाहता है। यानी ग़ुस्से, नफ़रत, लालच और बेरहमीसे किये जानेवाले शोषण — जिनका आख़िरी नतीजा लड़ाअी-झगड़ा, दुश्मनी और जंग होता है — पर क़ाबू रखा जाय और अुन्हें बसमें कर लिया जाय। अगर हम आदमी और आदमीके बीचके सम्बन्धोंसे हिंसाको निकालनेमें कामयाब हो जायँ, तो अिन्सानोंकी जमात अपनी तारीख़में तरक़्क़ीका सबसे बड़ा क़दम अुठायेगी। अेक बार अिसे हासिल कर लिया गया कि जानवरोंपर रहम करने और सारे जीवोंको पूज्य समझनेका काम बड़ा आसान हो जायगा। चल सकनेके पहले ही हम दौड़नेकी कोशिश न करें। अगर अहिंसाकी भावना अेक बार लोगोंके दिलमें बस गअी, तो वह ज़रूर बढ़ेगी। यह मान लेना ग़लत है कि मछली या मांस खानेवाले लोग हिंसाके अुसूलको मानते हैं। — का० का०]

ज़ाकिरहुसेन-कमेटीने बच्चोंको बुनियादी तालीम देनेके लिअे बुनियादी दस्तकारियोंके तौरपर कताअी, बुनाअी, सुतारी, खेती और चमड़ेके कामकी सिफ़ारिश की है। शायद चमड़ेके कामको छोड़कर दूसरी तीन दस्तकारियोंके बारेमें हिन्दुस्तानके अलग-अलग हिस्सोंमें तजरबे किये जा रहे हैं। कमेटीने अिन दस्तकारियोंकी सिफ़ारिश करते हुअे साफ़ तौरसे यह राय ज़ाहिर की है कि मुक़ामी और भूगोली हालतोंका ध्यान रखकर दूसरी कोअी भी दस्तकारी पसन्द की जा सकती है, बशर्ते कि वह तालीम और रुपये-पैसेकी दो ज़रूरी शर्तोंको पूरा करे। यहाँ मैं वर्धा-योजनाके माहिरोंके सामने, अुनके मुनासिब विचार और मंज़ूरीके लिअे, बुनियादी दस्तकारीके रूपमें मछलीगिरीको रखनेकी हिम्मत करता हूँ।

मछलीगिरी अेक अहम धन्धा है, जो हमारे ज़रूरतसे कम ख़ुराक पानेवाले लाखों-करोड़ों लोगोंको क़ूवत बढ़ानेवाला खाना दे सकता है। हममें से जो लोग समुन्दरके किनारे रहते हैं और मछुओंको औज़ारोंकी मददसे मछली पकड़ते देखते हैं, वे मछलीगिरीकी तालीमी अहमियतको समझ सकते हैं। तालीमके ज़रियेके रूपमें पसन्द की जानेवाली बुनियादी दस्तकारीको अिन्सानकी बुनियादी ज़रूरतोंमें से किसी अेकको पूरा करना ही होगा। खेतीकी तरह मछलीगिरी भी समुन्दरके पास रहनेवाले लोगोंकी ख़ुराककी बुनियादी ज़रूरतें पूरी करती है। क़ौमी अिक़्तिसादी (आर्थिक) योजनामें अुसकी अपनी ख़ास जगह है।

ज़ाकिरहुसेन-कमेटीकी रिपोर्टमें पढ़ाये जानेवाले विषयोंकी जो तफ़सील दी गअी है, वह मछलीगिरी जैसे अुत्पादक कामसे सम्बन्ध रखते हुअे और अुसके ज़रिये पूरी की जा सकती है। आज भी देशके सारे मछुअे जाल बनानेके लिअे सनसे सूत कातते वक़्त अुस तकलीका अिस्तेमाल करते हैं, जिसकी तालीमी अहमियतको अब बहुतसे लोग समझने लगे हैं। पहले पाँच दरजोंमें सन पैदा करने, अुससे सूत कातने, तकली बनाने और जाल बनानेकी तालीम दी जा सकती है। विद्यार्थियोंके ज़रिये अिस्तेमाल की जा सकनेवाली जालोंसे की जानेवाली मछलीगिरी भी अिसमें शामिल की जा सकती है। अलग-अलग क़िस्मकी मछलियाँ पकड़नेके लिअे अलग-अलग तरहकी जालें तैयार करनेमें पैमानों और जॉमेट्रीकी जानकारी ज़रूरी होगी। अिस तरह अिस धन्धेसे ताल्लुक़ रखते हुअे गणितका विषय आसानीसे सिखाया जा सकता है। भूगोल (जो समाजी विषयोंमें शामिल है) और मामूली सायन्सका जैसा क़ुदरती सम्बन्ध मछलीगिरीसे है, वैसा और किसी दस्तकारीसे — कताअी और बुनाअीसे भी — नहीं है। मछलीगिरीसे मातृभाषा (मादरी ज़बान), ड्राअिंग और संगीत जैसे विषयोंको पढ़ानेकी प्रेरणा भी मिलेगी। आख़िरी दो दरजोंमें असल मछलीगिरीके साथ किश्ती बनाना, सायन्सी तरीक़ोंसे मछलियोंको सुखाकर या नमक छिड़क कर बहुत दिनों तक महफ़ूज़ रखना, मछलीसे खानेकी कअी चीज़ें बनाना, मछली पालना और मछलियोंकी ख़ास जानकारी, वग़ैरा विषय पढ़ाये जा सकते हैं।

मछलीगिरीके अपनी ज़रूरतें ख़ुद पूरी करनेके पहलूपर मैं यह कह सकता हूँ कि यह धन्धा आर्थिक (अिक़्तिसादी) निगाहसे कताअी और बुनाअीकी तरह ही, बल्कि अुससे भी ज़्यादा खरा है। और, मेरी अिस बातका कोअी विरोध नहीं किया जा सकता। सनका धागा, अलग-अलग तरहकी जालें, ताज़ी, सुखाकर रखी हुअी, मसाला लगाकर टीनमें बन्द की हुअी, और नमक छोड़कर महफ़ूज़ की हुअी मछलियाँ, मछलीकी खाद, मछलीका मोटा आटा, मछलीका तेल और कॉलेजों और स्कूलोंको बेचनेके लिअे अिकट्ठे किये गये मछलियोंके नमूने — ये सब बहुत जल्द बिक सकते हैं और सही ढंगपर चलाये जानेवाले स्कूलका चालू खर्च भी पूरा कर सकते हैं।

थोड़ेमें, बुनियादी दस्तकारीके रूपमें मछलीगिरी (अ) तालीमका सच्चा ज़रिया होगी, (आ) बुनियादी तालीमका ७ बरसका कोर्स पूरा करनेके बाद विद्यार्थीके रोटी कमानेका साधन होगी, (अि) स्कूलका चालू खर्च पूरा करनेमें मदद देगी, (अी) विद्यार्थियोंमें मिलजुल कर

ठीक-ठीक काम करनेकी आदत डालेगी, (आ) मछली पकड़नेके धन्धेको समाजी दरजा देगी, और (इ) पैसे व तालीमकी निगाहसे पिछड़ी हुअी, मछली पकड़नेका धन्धा करनेवाली जातियोंको आम तौरपर ऊँचा अुठायेगी।

मुझे सिर्फ़ अेक ही शक है — क्या अिस दस्तकारीका गांधीजीकी नअी तालीमकी अहिंसक बुनियादसे मेल बैठेगा?

हिन्दुस्तानके बम्बअी, मद्रास और अुड़ीसाके सूबोंमें ३ हज़ार मीलसे ज़्यादा लम्बा समुन्दरका किनारा फैला हुआ है। वहाँ आज बुनियादी तालीम और मछलीगिरीको बढ़ानेकी अिच्छा रखनेवाली कांग्रेसी वज़ारतें राज कर रही हैं। अुन्हें चाहिये कि वे बुनियादी दस्तकारीके रूपमें मछलीगिरीकी संभावनाओंकी खोज करें और किनारेके भागोंमें अैसे स्कूल शुरू करें। हिन्दुस्तानी तालीमी संघके लिअे भी यह अच्छी बात होगी कि वह कताअी, बुनाअी और खेतीके दायरेसे आगे बढ़कर अिस तरफ़ कुछ तजरबे करे।

(अंग्रेज़ीसे) अेच० अेम० मांजरेकर

गांधीजीकी बिहार-यात्राकी डायरी

८-३-'४७

गांधीजीने आज प्रार्थना-सभामें बोलते हुअे कहा — "जिस मक़सदसे मैं बिहार आया हूँ सिर्फ़ अुसके ही सम्बन्धमें हमेशा बोलते रहने पर अुम्मीद है, आप मुझे माफ़ करेंगे। सताअे हुअे मुस्लिम रोज़मर्रा अपने दुःख-दर्दकी जो कहानियाँ मुझे सुनाते हैं अुन्हें सुनना मेरा फ़र्ज़ हो गया है। अुनमेंसे अेकने आकर मुझसे शिकायत की है कि, अभी दो दिन पहले तक, मुसलमानोंके घरोंसे सामान अुड़ाया गया है। अगर यह सही है, तो ज़्यादा-से-ज़्यादा कमनसीबीकी बात है। और, अगर किसी भी हद तक यही आम हालत है, तो अिससे पछतावेकी भावनाकी कमी ज़ाहिर होती है। अिस भावनाके बिना तो बिहारकी दोनों जातोंके बीच हेलमेल मुमकिन नहीं है। यही सारे हिन्दुस्तानके बारेमें सच है।"

गांधीजीको अेक तार मिला है। अुसके ज़रिये अुन्हें चेतावनी दी गअी है कि, चूँकि बिहारके लोगोंने जो कुछ भी किया है वह सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ अदा करनेके ख़यालसे किया है, अिसलिअे आप अुनकी निन्दा मत कीजिये। गांधीजीने अिस तारपर अचरज प्रगट करते हुअे कहा — "यह चेतावनी देकर तार भेजनेवालेने हिन्दुस्तान या हिन्दू धर्मकी कोअी भलाअी नहीं की। यह सब मैं हिन्दू होनेके नाते कह रहा हूँ। मेरा अपने धर्मपर जीता-जागता विश्वास है। हिन्दू होता हुआ मैं अेक अच्छा मुसलमान, अीसाअी, पारसी या यहूदी भी हूँ। अिसलिअे मेरा दावा है कि मैं ज़्यादा अच्छा हिन्दू हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप लोगोंमें से भी हरअेक अिसी तरह महसूस करे। अैसी हालतमें, अगर मैं अपने हिन्दू भाअियों या किसी दूसरे भाअीके ग़लत कामोंको बढ़ावा दूँ, तो मेरा हिन्दू होनेका दावा खो जायगा।

"मेरा तो विश्वास है कि आपने जो ग़लत काम किये हैं अुनकी बाबत आपकी आखें खोलकर मैं अेक सेवा कर रहा हूँ। पंजाबमें जैसी शरारतें हो रही हैं वैसी शरारतोंमें आपको बह नहीं जाना चाहिये। अगर आप आज़ाद हिन्दुस्तानके आज़ाद नागरिक बननेकी क़ाबिलियत हासिल कर रहे हैं तो आपको हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सेमें, या किसी दूसरी जगह, वरपा होनेवाले बुरे कारनामोंको सुनकर ख़ुद वैसा ही नहीं करना चाहिये। मेरा और आपका फ़र्ज़ अच्छाअीकी नक़ल करना है, चाहे वह कहीं भी दीख पड़े।

"अब चूँकि मैं आपके बीच चार दिनोंसे रह रहा हूँ, मैं आपका ध्यान आप-ख़ुदके और सताअे हुअे मुसलमानोंके तअीं अेक फ़र्ज़पर खींचनेकी हिम्मत करता हूँ। वह फ़र्ज़ यह है कि आप सताअे हुअे लोगोंकी मददके लिअे अपनी शक्तिभर पैसा दें। आपसे जो कुछ हो सके, प्रायश्चित्तके निशानके तौरपर दीजिये। बद-क़िस्मतीसे मुझे, बिना किसीसे पूछे, आपको अिस साफ़ बातकी याद दिलानी पड़ती है। बहुतसे हिन्दुओंने नोआखालीके पीड़ितोंके लिअे मेरे पास दान भेजा था। मेरे ख़्यालसे अुसकी कुल रक़म कोअी तीन लाख रुपये हुअी होगी। मुझे आशा है कि, मेरे फिरसे याद दिलानेपर, आप लोग अुदारताके साथ दान करेंगे। क़ुदरतन, ख़र्च की जानेवाली अेक-अेक पाअीका हिसाब दिया जायगा। आपको अिस झूठे भरोसेपर नहीं रहना चाहिये कि, चूँकि अब सरकार हमारे नुमाअिंदोंकी है अिसलिअे वह रुपये-पैसेके मामलेमें सब कुछ कर लेगी।

"सरकार जितनी ही नुमाअिंदा होती है अुतनी ही, जनताके पैसेको काममें लानेमें, अुसकी कठिनाअियाँ भी बढ़ जाती हैं। अिसलिअे, अच्छे अिन्तज़ामवाले समाजमें सरकारपर जो जायज़ पाबंदिआँ होती हैं, अुन्हें सिर्फ़ रिआयाके दानसे ही पार किया जासकता है।"

१०-३-'४७

आज शामकी प्रार्थनामें जनताके शान्त होनेमें कुछ देरी लगी। अिसलिअे, अपने भाषणके शुरूमें गांधीजीने कहा — "अगर आप अपना यही तरीक़ा जारी रखेंगे तो मैं जो-कुछ कहना चाहता हूँ वह सब कहना मेरे लिअे मुश्किल हो जायगा। मुझे अुम्मीद है कि आप प्रार्थनाकी सच्ची ख़्वाहिशसे, और फिर अीश्वरका काम करनेके लिअे, अिस मैदानपर आते है, न कि सिर्फ़ नज़ारे देखनेके लिअे।

"कअी ख़त-किताबत करनेवालोंने मुझे अुलाहना दिया है कि मैं अपने प्यारे सियासी विचारोंके प्रचारके लिअे अपनी प्रार्थना-सभाओंका अुपयोग कर रहा हूँ। मगर अिस बाबत मुझे कभी भी अैसा महसूस नहीं हुआ कि मैंने कोअी जुर्म किया है। अिन्सानकी ज़िन्दगी अखंड है, अिसलिअे अुसके अलग अलग हिस्सों, या सियासत व नीतिके बीच कोअी रेखा नहीं खींची जा सकती। जो व्यापारी ठगाअी करके दौलत अिकट्ठी करता है और सोचता है कि, नामचारके धार्मिक कामोंमें अुसका कुछ हिस्सा खर्च करके अुस बुरी कमाअीके पापोंको धो डालूँगा, वह महज़ अपने आपको धोखा देता है। अिन्सानकी रोज़मर्राकी ज़िन्दगी अुसकी आध्यात्मिक यानी रूहानी ज़िंदगीसे अलग हर्गिज़ नहीं हो सकती। दोनोंका अेक-दूसरीपर असर और जवाबी असर होता है।

"यह भी कहा जा सकता है कि, जिस नियमके मुताबिक़ खिलक़त चलती और सधी हुअी है, अुसे नियम बनानेवालेसे अलग नहीं किया जा सकता। अिन्सानी ज़बानमें तो यहाँ तक कहा जा सकता है कि अीश्वर ख़ुद अुस नियमके चक्रके अधीन है। हम लोगोंको यह कहावत बताअी जाती थी कि 'राजा कोअी ग़लती नहीं कर सकता।' लेकिन अीश्वरकी सृष्टि (खिलक़त) में अिस तरहका फ़र्क़ भी संभव नहीं है। सिर्फ़ अितना कहा जा सकता है कि 'नियममें कोअी ग़लती नहीं हो सकती, क्योंकि नियम और नियम बनानेवाला अेक ही है।' घासके छोटेसे-छोटे तिनकेके भी अीश्वरके नियमोंके चक्रसे बरी रह जानेकी गुंजाअिश नहीं है।"

अिसके बाद, गांधीजीने अेक बहुत साफ़ और अीमानदार दोस्तके पाससे आये हुअे अेक खतका ज़िक्र करते हुअे कहा — "अुस खतके ज़रिये मुझे याद दिलाअी गअी है कि मैं धार्मिक बर्दाश्तकी भावना पैदा करनेकी जो कोशिशें कर रहा हूँ वह सब बेकार हैं, क्योंकि, आखिरकार, हिन्दू-मुसलमानोंके झगड़े मज़हबी फ़र्क़ या नाअित्तिफ़ाक़ीके कारण नहीं होते, बल्कि अुनकी तहमें सियासी कारण हैं। धर्मका अुपयोग सियासी फ़र्क़ कायम करनेके लिअे बिल्लेके माफ़िक किया जा रहा है। अुस मित्रने यह राय ज़ाहिर की है कि, यह तो अेक ओर अखंड हिन्दुस्तान और दूसरी ओर बँटे हुअे हिन्दुस्तानके बीचका झगड़ा है। मैं मंज़ूर करता हूँ कि, सचमुच हिन्दुस्तानके बँटवारेका पूरा मतलब क्या है, सो अब तक मुझे नहीं मालूम। परन्तु मैं आपको

समझाना चाहता हूँ कि अगर अिन झगड़ोंको महज़ नामचारके सियासी झगड़े ही मान लिया जाय तो क्या अुनका यह मतलब है कि शराफ़त और नैतिकता (अिख़लाक़)के तमाम नियमोंको तिलांजलि दे दी जाये? जब अिन्सानी झगड़ोंको अिख़लाक़ी ख़्यालसे अलग कर दिया जायगा, तो सिर्फ़ अैटम-बमके अुपयोगके लिअे ही रास्ता साफ़ रह जायगा, जिसमें कि अिन्सानियतका अेक-अेक निशान पूरी तरहसे बरतरफ़ कर दिया जाता है। अगर हिन्दुस्तानके लोगोंके विचारोंमें अीमानदाराना फ़र्क़ हो तो क्या अिसका यह मतलब होना चाहिये कि चालीस करोड़ हिन्दुस्तानी हैवानोंकी सतहपर अुतर आयें? बिना ज़रा भी दयाके, मर्दों, औरतों और बच्चोंको, क़ुसूरवार और बेक़ुसूर सबको, अेक समान क़त्ल कर डालें? क्या वे अपने फ़र्क़ोंको शरीफ़ाना ढंग और दोस्तीकी भावनासे मिटानेके लिअे राज़ी नहीं हो सकते? अगर वे अिसमें चूक गअे तो, रास्तेके अखीरमें, सिर्फ़ अैसी ग़ुलामीको बाट जोहते हुअे पायेंगे जिससे फिर कभी पल्ला न छुड़ाया जा सके।"

अिस मौक़ेपर मंचके पासके लोग कुछ आवाज़ें करने लगे और गांधीजीको अपना भाषण खत्म कर देना पड़ा। दूसरे दिनोंके बरखिलाफ़, वे मुस्लिम पीड़ितोंके लिअे धन अिकट्ठा करनेको रुके रहे। अुन्होंने जनतासे, अपनी थैलियोंको अुदारताके साथ खोलकर, भरसक दान देनेके लिअे ज़ोरदार अपील की। अिस सवालके जवाबमें कि, क्या नोआखालीकी मददके लिअे मुसलमानोंने भी अिसी तरह दान दिया था, महात्मा गांधीने कहा—"यह सच है कि मेरे पास अुनके पाससे क़रीब क़रीब कुछ नहीं आया। मैं समझता हूँ कि अिसकी वजह यह है कि अब हिन्दुस्तानके ज़्यादातर मुसलमान मुझे अपने दोस्तके बजाय दुश्मन-नंबर-अेक मानते हैं। फिर भी, कुमिल्लामें मुस्लिम और अीसाअी मित्रोंने ८०० से ज़्यादा रुपये और शंखकी चूड़ियों और सिन्दूरकी अेक पार्सल मेरे पास भेजी थी। चूड़ियाँ और सिन्दूर अुन हिन्दू औरतोंको बाँटनेके लिअे था, जिनके सौभागके निशान दंगोंके वक़्त जबरन हटा दिये गये थे।"

११-३-'४७

भाषणके शुरूमें गांधीजीने कहा—"शायद पटनामें फ़िलहाल यह मेरी आखिरी साँझ-प्रार्थना है। क्योंकि, कलसे मैं दौरा शुरू करनेवाला हूँ। कुछ दिनों तक मेरा खास मुक़ाम यहीं रहेगा और रोज़ रातको आरामके लिअे मैं वापस आ जाया करूँगा। प्रार्थना तो दूसरी जगहोंमें ही हुआ करेगी। फिर भी, मुझे आशा है कि कल शामको मुस्लिम पीड़ितोंके लिअे दान देनेमें आप लोगोंने जो भावना दिखाअी थी वह, बिना किसी कमीके, बरक़रार रखी जायगी। कुल चंदा क़रीबन दो हज़ार रुपयेका हुआ था। अिसके अलावा कुछ ज़ेवर भी मिले थे, जो अभी नीलाम नहीं किये गअे। मुझे ख़ुशी है कि औरतोंने अपने ज़ेवर दिये। अिस संबंधमें मैं अुनसे कहना चाहता हूँ कि औरतका सच्चा ज़ेवर शुद्ध दिल ही होता है। अुसकी जगह शरीरके ज़ेवर हर्गिज़ नहीं ले सकते।"

गांधीजीके पास अेक खत हालहीमें आया है। अुसका जवाब देते हुअे अुन्होंने कहा—"अगर कोअी मुझे गाली दे तो मेरे अुलटकर गाली दे देनेसे काम नहीं चलेगा। बुराअीका जवाब बुराअीसे देनेपर वह बुराअी घटती नहीं, बल्कि बढ़ती है। यह अेक क़ुदरती क़ानून है कि हिंसा ज़्यादा बड़ी हिंसासे कभी शान्त नहीं होती। अुसको शान्त करनेका अिलाज सिर्फ़ अहिंसा या अुसका मुक़ाबला न करना ही है। मगर मुक़ाबला न करनेका सच्चा मतलब अक्सर ग़लत समझा गया है, और तोड़ा-मरोड़ा भी गया है। अुसका मतलब यह कभी नहीं रहा कि, अहिंसक आदमीको हमलावरकी हिंसाके सामने झुक जाना चाहिये। हिंसाका जवाब हिंसासे न देते हुअे, अहिंसक को, हिंसककी बेजा माँगोंके सामने सिर झुकानेसे, अपनी मौतके वक्त तक, अिनकार करते रहना चाहिये। मुक़ाबला न करनेका सच्चा अर्थ यह है।

(पृष्ठ ७७ के दूसरे कालमपर)

अेक और शानदार क़दम

अगर हमें सन्तोषके लायक़ काम करना हो, तो बहुतसे आर्थिक (अिक़्तिसादी) कामोंमें हमें लम्बे समयकी योजनायें और अुसी वक़्तकी ज़रूरतोंको पूरे करनेवाले क़दम साथ-साथ अुठाने चाहियें, और अिन दोनोंका ठीक मेल बैठाना चाहिये। अेक सुतारको आलमारी बनानेके लिअे अच्छी तरह सूखी हुअी लकड़ीकी ज़रूरत हो, तो सरकारकी जंगलोंसे ताल्लुक़ रखनेवाली नीति अिस ज़रूरतको पूरी करनेवाला लम्बे समयका प्रोग्राम होगा। किसानको अपने खेतोंको सींचनेके लिए पानीकी ज़रूरत हो, तो अिसे पूरा करनेके लिअे सरकारको नहरें, तालाब, कुअें, वग़ैरा बनवानेकी लम्बी योजना हाथमें लेनी होती है। ये दोनों चीज़ें अेक-दूसरीकी पूरक हैं। लेकिन लम्बे समयकी नीतिका आधार थोड़े समयकी नीतिकी माँगपर होता है। थोड़े वक़्तकी अिक़्तिसादी (आर्थिक) हलचलोंकी ज़रूरतोंको पूरी करनेके लिअे लम्बे वक़्तकी योजनायें बनाना सरकारका काम है। अिन दोनोंके बीच ठीक मेल न सधे, तो नुक़सान हो सकता है। मिसालके तौरपर, जहाँ सिंचाअीके लिअे खेत ही न हों, वहाँ नहरें, तालाब, कुअें वग़ैरा खुदवाना सरकारकी बेवकूफ़ी मानी जायगी।

सामन्तशाहीके ज़मानेमें घोड़ा अिंग्लैण्डके अिक़्तिसादी निज़ामका आधार था। घोड़ा बोझ ढोता, किसानोंको खेती करनेमें मदद पहुँचाता, मुसाफ़िरी और जंगमें सवारीका काम देता और कभी-कभी गाड़ी खींचनेके काम भी आता। आजके लोकशाहीके ज़मानेमें जो सेवा राज करता है, वही सेवा सामन्तशाहीके ज़मानेमें कुछ हद तक लॉर्ड या जागीरदार करते थे। अिसलिअे घोड़ेके पालने-पोसनेकी तरफ़ ध्यान देनेका काम अुन्हींके सिर था, क्योंकि वह लम्बे वक़्तका कार्यक्रम था। अिसकी वजहसे ज़रूरी स्टैण्डर्ड और गुणको टिकाये रखनेके लिअे और घोड़ेको कामयाबीके साथ पालने-पोसनेवालेको अिनाम देनेके लिअे घुड़-दौड़की होड़का रिवाज चालू हुआ। क़ुदरती ताक़तसे चलनेवाली मशीनोंके आते ही कोयले और तेलने मिलकर घोड़ेको मैदानसे खदेड़ दिया। जुआरियों व शर्त्त बदनेवाले लोगोंका शौक़ पूरा करनेके लिअे, बीते हुअे ज़मानेकी बेहूदी लकीरकी तरह, अुस लम्बे वक़्तकी योजनाका अेक हिस्सा घुड़-दौड़की होड़के रूपमें हमारे पास बच रहा। थोड़े वक़्तकी ज़रूरतोंके मिट जानेपर भी लम्बे वक़्तकी योजनाका यह बचा-खुचा हिस्सा भयंकर मुसीबत बन गया है। वह शहरके भोले-भाले कारकूनों और छोटे-छोटे व्योपारियोंकी ज़िन्दगीको बरबाद कर रहा है। लालचके शिकार होकर ये बेचारे शर्त्त बदते हैं। अिस तरह घुड़-दौड़की होड़ समाजके जिस्मपर कोढ़के समान है। यह बीमारी हमारे देशको भी लग चुकी है। कितने ही राजे-महाराजे और दौलतमन्द लोग अिसमें करोड़ों रुपये पानीकी तरह बहा देते हैं। हमेशा पैसा बरबाद करनेवाली और अन्धा-धुन्ध खर्च करनेवाली सरकारें पुराने ज़मानेके माली निजामके अिस बचे-खुचे, बेमतलब हिस्सेको खत्म करनेके बदले आमदनीका ज़रिया बनाकर अुसे मान देती हैं। अिस होड़पर लगाये गये करसे बम्बअी सरकारको लगभग अेक करोड़की और कलकत्ताको लगभग पौन करोड़की आमदनी होती है। अिससे यह अन्दाज़ लगाया जा सकता है कि यह बीमारी लोगोंमें कितनी फैल चुकी है। लालचसे दूर रहनेवाली किसी भी समझदार सरकारको अिस हत्यारे धन्धेको जल्दीसे-जल्दी बन्द करा देना चाहिये।

घुड़-दौड़की होड़में शर्त्त बदनेके ख़िलाफ़ क़ानून बनाकर मद्रासकी वज़ारतने दूसरोंको रास्ता दिखाया है। ताँगे, बग्घी वग़ैराके लिअे तो घोड़ोंकी ज़रूरत रहेगी ही, लेकिन शर्त्त बदनेके लिअे रखे जानेवाले घोड़ोंसे मामूली लोगोंको कोअी मतलब नहीं। अिस हालतमें अैसे घोड़ोंकी सारी होड़ोंको अेकदम बन्द करा देना चाहिये। हमें आशा है कि दूसरे सूबोंकी सरकारें भी अिस मिसालपर अमल करेंगी।

अिसके अलावा, हिन्दुस्तानके आर्थिक (अिक़्तिसादी) अिन्तज़ामका केन्द्र गाय है । अिसलिअे अच्छे गाय-बैलों, मुर्ग़ियों, बतखों, बकरियों, भेड़ों, वग़ैराको पालने-पोसनेके बारेमें लम्बे वक़्तकी योजनाकी खास ज़रूरत है । घोड़ोंकी सार-सँभाल करनेमें आज जो शक्ति बरबाद होती है, अुसे अिन क़ामोंमें लगाना चाहिये । अिनसे फ़ायदा भी होगा और हमारे देशकी आर्थिक ज़िन्दगीके साथ अिनका मेल भी बैठेगा ।

(अंग्रेज़ीसे) जे० सी० कुमारप्पा

हरिजनसेवक
३० मार्च १९४७

नया मैदान, नये रास्ते

प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियोंके सदरों और मंत्रियोंकी अिलाहाबादकी बैठकमें रचनात्मक कार्यक्रमकी बाबत जो प्रस्ताव अेक रायसे पास हुआ था अुसे कांग्रेस कार्य-समितिने मंज़ूर कर लिया है। कार्य-समितिकी अिस कार्रवाअीसे ज़ाहिर होता है कि वह अपनी बदलती हुअी जिम्मेदारियोंके बारेमें बाखबर है । अिससे हमें ख़ुशी हुअी है । कुछ दिन पहले ब्रिटेनमें जब मि० चर्चिलको हटा कर हुकूमतकी बागडोर मज़दूर पार्टीके हाथोंमें सौंपी गअी थी तब दुनियाको अचरज हुआ था कि ब्रिटिश जनता शांतिके ज़मानेके कामोंकी ज़रूरतोंके प्रति कितनी जागरूक है । रचनात्मक कार्यक्रमके बारेमें कार्य-समितिका यह प्रस्ताव भी कम क्रांतिकारी नहीं है, जिसके ज़रिये प्रांतीय कांग्रेस कमेटियोंको अिलाहाबादके प्रस्तावपर अमल करनेका आदेश दिया गया है और जो अिस पत्रके पिछले अंकमें छापा हो चुका है ।

सियासी हलचलके कार्यक्रमके लिअे जिन गुणोंकी ज़रूरत होती है, अुनसे बहुत ज़्यादा अलग क़िस्मके गुण रचनात्मक कामके लिअे ज़रूरी होते हैं । अुसके लिअे अरसे तक कोशिश करने, पूरा ध्यान लगाने और कअी फ़ायदेमंद — मसलन, समाजी, अिक़्तिसादी, भोजन-विद्या-सम्बन्धी, आरोग्य और सफ़ाअी-सम्बन्धी और तालीमी — पहलुओंमें ग्राम-सेवाकी तालीम लेनेकी ज़रूरत है । अगर अिलाहाबादके प्रस्तावको पूरी सचाअीके साथ अमलमें लाना है तो पहलेके कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंको, रचनात्मक कामकी कठिन और कसौटी करनेवाली ज़िम्मेदारियाँ अुठानेके पहले, ज़रूरी तालीम हासिल कर लेनी चाहिये । हमें अुम्मीद है कि ताल्लुक़ रखनेवाली कमेटियाँ अिसमें विषयोंके छोटे छोटे पाठ्यक्रमों (निसाबों) और कारगर अमली तालीमका फ़ौरन अिन्तज़ाम करेंगी ।

अब तक सियासी सरगर्मीमें पड़े हुअे कार्यकर्त्ताओंको रचनात्मक काम करनेवाली संस्थाओंके मेम्बर नहीं बनाया जाता था । मगर अब कांग्रेस रचनात्मक कामोंकी ओर मुड़ रही है, अिसलिअे अुन सब लोगोंको, जो गाँवोंकी भलाअी करनेकी ख़्वाहिश रखते हों, अिन संस्थाओंके कामकाजी मेंबर बननेका हक़ ज़रूर देना चाहिये । अबसे आज़ाद हिन्दुस्तानके लिअे जम्हूरियत (प्रजातंत्र) की तालीम देनेको भी रचनात्मक काम ही मानना होगा । अब तक देश आज़ादीकी लड़ाअीमें लगा था अिसलिअे हमारे ज़्यादातर बेग़र्ज़ सेवक राजनीतिक मैदानपर खिंचे हुअे थे । अब अुन परखे हुअे देशभक्तोंके लिअे कामके दूसरे दरवाज़े खुल गअे हैं । हमें आशा है कि वे अपने देश-भाअियोंकी हालत सुधारनेके लिअे भी अुसी जोश और सेवाकी भावनासे आगे बढ़ेंगे ।

(अंग्रेज़ीसे) जे० सी० कुमारप्पा

रेडियोकी भाषा-नीति

[सब जानते हैं कि, पिछले कअी बरसोंसे, कुल हिन्द रेडियोकी ज़बानसे सम्बन्ध रखने वाली नीति साहित्यिक (अदबी) हिन्दी और अुर्दूके हिमायतियोंके बीच कड़वी बहसका विषय बनी हुअी है । हिन्दी साहित्य-सम्मेलनने तो रेडियोका बायकाट तक कर दिया था । ख़ुशीकी बात है कि अन्तरिम क़ौमी सरकारने अिस परेशान करनेवाले सवालको हल करनेके लिअे होशियारी और दूरन्देशीसे भरा फ़ैसला किया है। हमें आशा है कि यह टाला जा सकनेवाला झगड़ा अब बन्द हो जायगा और हिन्दुस्तानी, जो सारे हिन्दुस्तानियोंके विचारोंको ज़ाहिर करनेका ज़रिया है, कुल हिन्द रेडियोके मारफ़त तरक़्क़ी करेगा । सारे हिन्दुस्तानकी अिस भाषाके हिमायती रेडियोकी भाषासे सम्बन्ध रखनेवाले नीचेके सरकारी बयानमें यह पढ़कर खुश होंगे कि "रेडियो सुननेवालोंकी अेक बड़ी तादाद यह नहीं चाहती कि साहित्यिक या अदबी हिन्दी और अुर्दूके हिमायतियोंके झगड़ेमें हिन्दुस्तानीका गला घोंटा जाय । अिसलिअे सरकारका विचार है कि रेडियो प्रोग्रामके बन्दोबस्तमें, साहित्यिक हिन्दी और अुर्दूसे बिलकुल अलग, सादी और आसान हिन्दुस्तानीके प्रोग्रामको भी जगह दी जाय ।" अेसोशियेटेड प्रेस ऑफ अिण्डियाकी रिपोर्टके आधारपर सरकारी बयान नीचे दिया जाता है । — संपादक]

सरकार स्टैण्डिंग अेडवाअिज़री कमेटीकी अेक रायसे की गअी अिस सिफ़ारिशको मंज़ूर करती है कि हिन्दुस्तानीके शब्द चुननेमें नीचेके अुसूलोंपर अमल किया जाय —

(अ) जहाँ तक हो सके, हिन्दुस्तानीके बुनियादी शब्द-भंडार या लुग़तमें पाये जाने वाले शब्दोंका अुनके मौजूदा रूपमें या नये लफ़्ज़ बनानेके लिअे, निकासका ख़्याल किये बिना, सबसे पहले अिस्तेमाल किया जाय; (आ) जहाँ बुनियादी लुग़त ज़रूरी शब्दोंके लिअे काफ़ी मसाला न दे सके, वहाँ देशी शब्दों या अुनके बदले हुअे रूपोंको तरजीह दी जाय; (अि) देशी खजानेसे हमेशा अैसे ही शब्द लिअे जायँ, जिन्हें ज़्यादासे ज़्यादा लोग समझ सकें ।

सरकारकी निगाहमें हिन्दुस्तानीके पर्यायवाची या हममानी लफ़्ज़ोंको चुननेका सबसे अच्छा रास्ता यह है कि हिन्दुस्तानीके लिअे अेक क़ायमी सलाहकार कमेटी बनाअी जाय । वह कमेटी सबसे पहले कुल हिन्द रेडियो-कोश (लुग़त) की जाँच करे और अब तक हासिल की हुअी रायोंका ख़याल रखते हुअे अुन शब्दोंके हममानी हिन्दुस्तानी लफ़्ज़ सुझाये, जो रेडियो-लुग़त या शब्दकोशमें पहलेसे मौजूद हैं । अिसके बाद वह कमेटी कुल हिन्द रेडियोके शब्द-भंडारको ताज़े-से-ताज़ा बनाने और रेडियोकी मारफ़त हिन्दुस्तानीको फैलाने और बढ़ावा देनेके बारेमें डाअिरेक्टर जनरलको सलाह दे । अिस कमेटीकी बनावटके बारेमें अलगसे अैलान किया जायगा ।

सरकार यह महसूस करती है कि रेडियो सुननेवालोंकी बहुत बड़ी तादाद यह नहीं चाहती कि साहित्यिक या अदबी हिन्दी और अुर्दूके हिमायतियोंके झगड़ेमें हिन्दुस्तानीका गला घोंटा जाय । अिसलिअे सरकार यह सोचती है कि रेडियो प्रोग्रामके बन्दोबस्तमें, साहित्यिक हिन्दी या अुर्दूसे बिलकुल अलग, सादी और आसान हिन्दुस्तानीके प्रोग्राम भी शुरू कर दिये जायँ । अिस निगाहसे सरकारने यह तय किया है कि ब्राडकास्ट प्रोग्राममें हिन्दुस्तानीके प्रोग्रामोंको भी थोड़ी जगह दी जाय।

अिन फ़ैसलोंको ध्यानमें रखते हुअे सरकारने क़ायमी सलाहकार कमेटीकी अेक रायसे की हुअी नीचेकी दूसरी सिफ़ारिशोंको मंज़ूर कर लिया है —

१. खबरोंको छोड़कर दूसरे सब बोलकर सुनाये जानेवाले प्रोग्राम या तो ऊँचे दरजेके हिन्दी और अुर्दू साहित्यसे लिये गये हों, या हिन्दी और अुर्दूके माने हुअे लेखकों और आलिमोंके लिखे हों। अिनमें से कुछ प्रोग्राम हिन्दुस्तानीमें भी होने चाहियें।

२. अलग-अलग स्टेशनोंके लिअे हिन्दी और अुर्दूका जो हिस्सा तय कर दिया गया है, अुसके मुताबिक़ औरतों, बच्चों और दूसरे खास सुननेवालोंके लिअे हिन्दी और अुर्दूके प्रोग्राम अलगसे रखे जाने चाहियें। अिसके अलावा, लोगोंको तालीम देनेवाले प्रोग्रामोंके तय किये हुअे समय को बढ़ानेकी कोशिश की जानी चाहिये। अिन प्रोग्रामोंका बहुत बड़ा हिस्सा हिन्दुस्तानीमें हो।

३. देहाती प्रोग्रामोंकी भाषा अैसी नहीं होती जिसे गाँव वाले आसानीसे समझ सकें। अिसके लिअे हर रेडियो स्टेशन-पर, ताल्लुक़ रखनेवाले ज़िलेके लोगोंमें काम करनेवालोंकी अेक सलाहकार कमेटी बनाअी जाय, जो देहाती प्रोग्रामोंसे सम्बन्ध रखनेवाली हर बातमें सलाह दे।

४. जिस तरह ऊँचे दरजेके अुर्दू शायरोंकी 'गज़लें' संगीतके प्रोग्रामोंमें ब्राडकास्ट की जाती हैं, अुसी तरह ऊँचे दरजेके हिन्दी कवियोंकी 'कविताअें' भी राग बैठाकर गाअी जानी चाहियें।

५. हिन्दी और अुर्दूके अलग-अलग तरहके ब्राडकास्टसे ताल्लुक़ रखनेवाले सारे सवालोंपर रेडियो महकमेको सलाह देनेके लिअे दोनों भाषाओंकी अेक अेक क़ायमी सलाहकार कमेटी होनी चाहिये। सरकारका यह प्रस्ताव है कि हिन्दुस्तानीके लिअे भी अैसी ही अेक कमेटी बनाअी जाय।

६. अच्छे और माने हुअे गीतोंमें हिन्दी और अुर्दू शब्दोंके बोलनेकी सावधानीसे जाँच की जाय और अुनकी बुनियादी, सही आवाज़को ही मान दिया जाय।

७. प्रोग्रामोंसे सम्बन्ध रखनेवाले हर तरहके कर्मचारियोंमें हिन्दी और अुर्दू जाननेवाले लोग काफ़ी तादादमें होने चाहियें।

८. हिन्दुस्तानी ब्राडकास्टसे ताल्लुक़ रखनेवाले मुलाज़िमोंको हिन्दी और अुर्दू दोनों भाषाअें जाननी चाहियें।

सरकारका यह ख़याल है कि शुरूके और आख़िरके अैलान, ब्राडकास्ट की जानेवाली चीज़ोंकी भाषाके मुताबिक़, साफ़ी हिन्दी या अुर्दूमें किये जायँ। सलामी या मुबारकबाद देते वक़्त वही ढंग अख़्तियार किया जाय, जो ब्राडकास्ट स्टेशनके अिलाक़ेमें आम तौरपर जारी हो।

सरकारका ख़याल है कि डेसिमलका हममानी लफ़्ज़ 'दशमलव' ही रहे, क्योंकि डेसिमल शब्द अुसीसे बनाया गया है।

अलग-अलग भाषाओंके अनुपात या निसबतके बारेमें सरकार अिन नतीजोंपर पहुँची है—

पेशावर: बोलकर सुनाअी जानेवाली चीज़ोंके प्रोग्राममें, जिसमें देहाती प्रोग्राम भी शामिल हैं, 'पश्तो'की तरफ़ साफ़ झुकाव होना चाहिये, लेकिन वह ५० फ़ी सदीसे ज़्यादा न हो। अुर्दू और हिन्दुस्तानीका अनुपात ९ और १ का होना चाहिये।

लाहौर: आम लोगोंकी पसन्दकी और अुन्हें अपील करनेवाली चीज़ें मुक़ामी ज़बान 'पंजाबी'में सुनाअी जायँ। लेकिन देहाती प्रोग्रामको शामिल करते हुअे 'पंजाबी'का कुल अनुपात २५ फ़ी सदीसे ज़्यादा न होना चाहिये। अुर्दू, हिन्दी और हिन्दुस्तानीके बीचका अनुपात तरतीबवार ७५ फ़ी सदी, १५ फ़ी सदी और १० फ़ी सदी होना चाहिये।

लखनअू: हिन्दी ७० फ़ी सदी, अुर्दू २० फ़ी सदी, और हिन्दुस्तानी १० फ़ी सदी।

बम्बअी: हिन्दुस्तानी, हिन्दी और अुर्दूका अेकसा अनुपात होना चाहिये।

कलकत्ता और ढाका: अूपरके मुताबिक़।

दिल्ली: हिन्दी ४० फ़ी सदी, अुर्दू ४० फ़ी सदी, हिन्दुस्तानी २० फ़ी सदी।

देशके ज़्यादा बड़े फ़ायदोंको ध्यानमें रखकर सरकारने हिन्दुस्तानीके विकास और अुसे बढ़ावा देनेका ध्येय अपने सामने रखा है। हिन्दुस्तानी वह भाषा है जो अुत्तरी हिन्दुस्तानमें आम तौरपर बोली और समझी जाती है, और देवनागरी या अुर्दू लिखावटमें लिखी जाती है। सरकारका ख़याल है कि वह जिन नतीजोंपर पहुँची है, अुनसे चाहे बहसमें पड़े हुअे दोनों दलोंको पूरा सन्तोष न हो, मगर आम तौरपर सब लोग अुन्हें मान लेंगे। ज़रूरी समझकर सरकार जिन नतीजोंपर पहुँची है, अुनमें आम मक़सदका ख़याल रखा गया है और सुननेवाले आम लोगोंकी और साहित्यिक रुचि या अदबी शौक़वाले लोगोंकी ज़रूरतोंके बीच समतौल क़ायम रखा गया है।

(अंग्रेज़ीसे)

गांधीजीकी बिहार-यात्राकी डायरी

(पृष्ठ ७५ से आगे)

"मिसालके लिअे, अगर कोअी हिंसा करनेकी धमकी देकर मुझसे कोअी हक़—जैसे पाकिस्तानका—मनवाना चाहे, तो मैं तुरन्त अुस हिंसाको लौटानेके लिअे दौड़ नहीं पड़ूँगा। मैं पूरी नर्माअीके साथ हमलावरसे पूछूँगा कि, अिस माँगसे सचमुच तुम्हारा क्या मतलब है। अगर मुझे सच्चा संतोष हो गया कि अुसकी माँग सचमुच कोशिश करनेके लायक़ है, तो मुझे यह ढिंढोरा पीटनेमें भी कोअी पसोपेश न होगा कि, माँग बाअिन्साफ़ है और हरअेक ताल्लुक़ रखनेवालेको अुसे माँगना ही चाहिये। मगर माँगके पीछे अगर जब्र हो, तो अहिंसकके लिअे सिर्फ़ अेक ही रास्ता है कि, जब तक अुसे अुसके अिन्साफ़के बारेमें विश्वास न हो जाय तब तक, वह अुसका अप्रतिरोध (अदम मुदाफ़िअत) करता रहे। अुसे हिंसाका जवाब हिंसासे नहीं देना, बल्कि अपने हाथ हटाकर और, साथ ही, माँगके सामने झुकनेसे अिनकार करके, अुस हिंसाको बेफल कर देना है। दुनियामें गुज़ारा करनेका यही अेक सभ्य तरीक़ा है। किसी भी दूसरे तरीक़ेका नतीजा सिर्फ़ हथियारोंको बढ़ानेकी होड़ हो सकता है। बीच बीचमें शान्तिका ज़माना आयेगा, मगर वह शांति हार और थकानसे पैदा हुअी और ज़रूरतके कारण क़ायम रखी जानेवाली शांति होगी। अुसमें ज़्यादा भयानक और कारगर हिंसाकी तैयारियाँ होती रहेंगी। ज़्यादा भयानक और कारगर हिंसाके ज़रिये शान्ति क़ायम करनेका लाज़िमी नतीजा अैटम-बम हुआ है, और वे सब बातें हुअी हैं, जिनकी अैटम-बम निशानी है। अुसमें अहिंसा और प्रजातन्त्र (जम्हूरियत)का पूरे-से-पूरा अिनकार ज़ाहिर हुआ है। जम्हूरियत तो बिना अहिंसाके संभव ही नहीं है।

"अहिंसक अप्रतिरोध (अदम मुदाफ़िअत)के लिअे हिंसाके जंगमें ज़रूरी हिम्मतसे बेहतर हिम्मतकी ज़रूरत होती है। माफ़ करना बहादुरोंका गुण होता है, न कि बुज़दिलोंका।" यहाँ गांधीजीने महाभारतकी वह कहानी बताअी, जिसमें राजा विराटके महलमें छिपकर रहते समय अेक पांडव घायल हो गया था। पांडव-भाअियोंने न सिर्फ़ अुस घटनाको छिपा लिया बल्कि यह सोचकर, कि जमीनपर ख़ूनका अेक बूँद भी गिर जानेसे राजा विराटको नुक़सान पहुँच सकता है, अुन्होंने अुसे सोनेके बर्तनमें भर लिया। फिर अुन्होंने कहा—"मैं चाहता हूँ कि हरअेक हिन्दुस्तानीमें—फिर वह हिन्दू, मुसलमान, अीसाअी, पारसी या सिख, कोअी भी हो—अिस तरहकी हिम्मत और धीरज बढ़े। सिर्फ़ यही अेक चीज़ है जिससे वे अपनी गिरी हुअी हालतसे अुबर सकते हैं।

"अहिंसाकी शिक्षा हर मज़हबमें मौजूद है, मगर मेरा विश्वास है कि हिन्दुस्तानमें अुसके अमलको अेक वैज्ञानिक (तरतीबी) रूप दिया गया है। अनगिनत ऋषि-मुनियोंने तपस्या करके अपनी ज़िंदगियाँ

न्योछावर की हैं, और, अखीरमें, कवियोंने महसूस किया कि अुनके बलिदानों (.कुरबानियों) से सफ़ेद बर्फ़वाला हिमालय पहाड़ पवित्र हो गया है। मगर आज अहिंसाका वह सब अमल क़रीब-क़रीब खत्म हो चुका है। गुस्सेका जवाब प्रेमसे और हिंसाका अहिंसासे देनेका सनातन (हमेशा रहनेवाला) नियम फिरसे ज़िंदा होना ही चाहिये। और, राजा जनक और रामचंद्रके अिस देशको छोड़कर यह कहाँ ज्यादा मुस्तैदीके साथ किया जा सकता है?"

१२-३-'४७

गांधीजीने आज शामकी प्रार्थना पटना सिटीके मंगलेश तालाबके किनारे की। राहमें वे कुम्हरेर गाँव में गये थे, जहाँ अेक .खुशहाल मुस्लिम परिवार पूरी तरहसे लूटकर बर्बाद कर दिया गया है। तमाम किताबें, साज-सामान और दूसरी चीज़ें नाश कर दी गअी हैं, और पड़ोसकी अेक मसजिदको, सारा लकड़ीका सामान निकालकर, क़रीब क़रीब खंडहर बना दिया गया है।

अपने भाषणके शुरूमें गांधीजीने अंग्रेज़ोंके हिन्दुस्तान छोड़नेके फ़ैसलेका हवाला देते हुअे कहा—"अंग्रेज़ोंका राष्ट्र असलियतको .खूब पहचाननेवाला राष्ट्र है। जब वह समझ लेता है कि अब राज करनेसे कोअी फ़ायदा नहीं, तो वह किसी देशसे अपना राज समेट लेनेमें आगा-पीछा नहीं करता। गुज़रे ज़मानेमें ब्रिटिश अितिहासकी राह यही रही है। अगर अंग्रेज़ जा रहे हैं—और वे ज़रूर जा रहे हैं—तो अिसके साथ साथ हिन्दुस्तानियोंका क्या फ़र्ज़ होना चाहिये? क्या हमें अपने ही बीचमें अेक दूसरेसे बदला लेते रहना है और, अिस तरह, अपनी .गुलामीको सदा क़ायम रखना है कि, अखीरमें, हमारी मातृभूमि (मादरे वतन) हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, ब्राम्हणिस्तान और अछूतिस्तान कहलानेवाले छोटे छोटे टुकड़ोंमें बँट जाय? बंगाल और बिहारमें जो कुछ हुआ और पंजाब या सरहदके सूबेमें जो कुछ हो रहा है अुससे ज्यादा दीवानापन और क्या हो सकता है?

"क्या हमें अपनी अिन्सानियत भूलकर घूँसेके बदले घूँसा मारनेमें लग जाना चाहिये? अगर किसी गुमराह आदमीपर किसी मंदिरको नापाक करने या किसी मूर्त्तिको तोड़ डालनेकी सनक सवार हो जाय, तो क्या, अिस कारणसे, किसी हिन्दूको कोअी मसजिद नापाक कर देनी चाहिये? क्या अिससे मंदिरकी रक्षा करनेमें किसी क़दर मदद मिलती है, या हिन्दू धर्मके हेतुकी ही रक्षा हो जाती है? ज़ाती तौरपर मैं .खुद अुतना ही बड़ा मूर्त्ति तोड़नेवाला हूँ जितना कि अुसकी पूजा करनेवाला। और, आप तमाम लोग भी, हिन्दू हों या मुसलमान, अिसी तरहके हैं; चाहें अिस बातको आप मंजूर करें या न करें। मैं जानता हूँ कि अिन्सान प्रतीक (ठोस निशान) को चाहनेवाला है। क्या मसजिद और गिरजे सचमुच वही चीज़ नहीं हैं जो मंदिर हैं? परमेश्वर सब जगह रहता है। मनुष्यके शरीरके अेक-अेक रोममें वह जिस तरह समाया हुआ है अुसी तरह, और अुसी प्रमाणमें, तमाम बेजान चीज़ोंमें भी वह मौजूद है। मगर मनुष्यने कुछ चीज़ों और जगहोंमें दूसरी चीज़ों और जगहोंसे ज्यादा पवित्रता मान ली है। अिस तरहकी भावनाअें, जब तक अुनका मतलब दूसरोंकी अुसी तरहकी आज़ादीको महदूद कर देना नहीं होता, आदरके लायक़ होती हैं। हरअेक हिन्दू और मुसलमानको मेरी यही सलाह है कि अगर कहीं भी कोअी ज़ुल्म किया जाय तो आप नम्रतासे, मगर पक्केपनके साथ, अुसके सामने झुकनेसे अिनकार कर दें। मैं .खुद, अगर पूजाकी आज़ादीपर रोक लगाअी जाय तो, मूर्त्तिको अपनी छातीसे चिपटाकर, अुसकी रक्षाके लिअे अपनी जान .कुरबान कर देना पसंद करूँगा।

"हिंसक मुक़ाबलेके लिअे ज़रूरी हिम्मतसे ज्यादा अूँची किस्मकी हिम्मतकी अिसके लिअे ज़रूरत है।" अिसके बाद गांधीजीने बादशाह खानके अहिंसाकी राह अख्तियार करनेकी कहानी बताते हुअे कहा—"वे तो अैसे समाजके हैं जिसमें पुश्त-दर-पुश्त घूँसेके बदले घूँसा चलता जाता है। अैसी भी मिसालें मौजूद हैं, जिनमें बेटेने बापसे क़त्लके झगड़े विरासतमें पाये हैं। बादशाह खान ने .खुद यह महसूस किया कि अिस तरहके कभी खत्म न होनेवाले बदलोंसे पठानोंकी .गुलामी क़ायम रह रही है। तब अुन्होंने अहिंसा मंजूर कर ली। अुन्होंने महसूस किया कि पठानोंके जीवनमें अेक क़िस्मकी क्रांति हो रही है। अिसके यह मानी नहीं कि हरअेक पठानकी ज़िन्दगी बदल गअी है; या .खुद बादशाह खान, जो अपने प्रेम और सेवासे लोगोंका मन जीत लेनेके कारण फ़क़ीर कहलाते हैं, अहिंसाकी सबसे अूँची मंज़िल तक पहुँच चुके हैं। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं रोज़-ब-रोज़ मंज़िलके ज्यादा-से-ज्यादा नज़दीक पहुँच रहा हूँ, क्योंकि मैंने अुसकी सचाअी समझ ली है, और महसूस कर ली है। वह यह बहादुराना अहिंसा है जिसकी, मैं चाहता हूँ, आप सब नक़ल करें।

"मैं बिहार अिसलिअे आया हूँ कि आप अपने अधम कामोंमें कितने नीचे अुतर गअे हैं, सो समझनेमें आपकी मदद करूँ। मेरा मक़सद यह है कि आपसे पछतावा कराअूँ और, अिस तरह, जो बुराअी की गअी है अुसे मिटा दूँ। मैंने अभी अभी मुसलमान परिवारका जो बर्बाद किया हुआ घर देखा है अुससे मैं रो-सा पड़ा। लेकिन मैंने अपना दिल फ़ौलादका बना लिया है और हिन्दुओंको अुनके मुसलमान भाअीकी तरफ़ अुनका फ़र्ज़ बतानेके लिअे यहाँ आया हूँ। सच्चे प्रायश्चित्तके लिअे सच्ची हिम्मतकी ज़रूरत है। और बिहार, जो कि चंपारनके सत्याग्रहके समय अितना अूँचा अुठ गया था और, जो वह भूमि है, जहाँ बुद्ध घूमे थे और अुन्होंने शिक्षाअें दी थीं, ज़रूर ही अेक बार फिर अूँचे, और ज्यादा अूँचे, अुठनेकी ताक़त रखता है, जहाँसे वह बाकी हिन्दुस्तानपर अपनी जोत फैला सके। सिर्फ़ खालिस अहिंसा ही अुसे अुस दरजेपर पहुँचा सकती है।

"मेरा ख़्याल है कि १९४२ में आप अहिंसाके सीधे रास्तेसे जब तब जो भटक गअे वही, बहुत हद तक, अिस मामलेमें आपको भटकानेका कारण हुआ है। आम तौरपर क़ानून तोड़नेकी भावनाने भी आपपर क़ब्जा कर लिया था। अिसी कारण आप अिस वक़्त भी बिना टिकटके सफ़र करते थे, ग़ैरकानूनी तौरपर या बेमतलब बदला लेनेके लिअे रेलगाड़ियोंकी ज़ंजीरें खींच लेते थे। अुसी कारण आपने ज़मींदारोंका सामान और अुनकी फ़सले भी जलाअीं। मैं ज़मींदारीका प्रेमी नहीं हूँ। मैंने अक्सर अुस प्रथाके खिलाफ़ कहा है। लेकिन मैं साफ़ साफ़ मंजूर करता हूँ कि मैं अुनका दुश्मन नहीं हूँ। मेरा कोअी दुश्मन नहीं है। धन-संबंधी और समाजी प्रथाओंमें, जिनमें बेशक बहुतसी खराबियाँ हैं, सुधार करनेका सबसे अच्छा मार्ग .खुद सहन करनेका राजमार्ग है। अिससे ज़रा भी भटक जानेसे अुस बुराअीका—जिसे हिंसासे दूर करनेकी कोशिश की गअी हो—सिर्फ़ रूप बदल जाता है। हिंसा बुराअीको जड़-मूलसे अुखाड़ फेंकनेकी ताक़त नहीं रखती।"

अखीरमें गांधीजीने हरिजनोंके पाससे आये हुअे अेक खतका ज़िक्र किया जिसमें अुनसे अिल्तिजा की गअी थी कि आप हमारे मोहल्लोंमें आअिये और हमारे साथ रहिये। गांधीजीने कहा—"मैं दोनों बातें बड़े प्रेमसे करता मगर मुझे अपना काम अुसी मक़सद तक महदूद रखना है जिसके लिअे मैं बिहार आया हूँ। मैंने तो अपने-आपको विचारों और कामोंमें भंगी बना लिया है, अिसलिअे मैं हरिजनोंको भूल नहीं सकता। मुझे दुःख है कि वे अब भी बहुतसी रुकावटोंके शिकार बने हुअे हैं और अुनकी शिकायतोंकी सुनवाअी मुस्तैदीके साथ नहीं की जाती।"

१३-३-'४७

अिशादुल्ला चौकके प्रार्थना-मैदानमें पहुँचनेके पहले गांधीजी पासा गाँवके दंगेमें बरबाद हुअे मुस्लिम घरोंको देखने गये। अुन्होंने अपने भाषणके शुरूमें अभी-अभी देखे नज़ारेका ज़िक्र किया और बिहारके अक्सर शान्त रहनेवाले लोगोंपर थोड़े वक़्तके लिअे जो पागलपन सवार हुआ था, अुसपर ताज्जुब ज़ाहिर किया। अुन्होंने

कहा — "जो कोअी यह मानता हो कि अिस तरह बिहारने नोआखालीका बदला लिया, अुसे मैं मज़बूतीके साथ यह कहूँगा कि बदला लेनेका यह तरीक़ा नहीं है। अगर हिन्दुस्तानियोंका अेक हिस्सा दूसरेको अपना दुश्मन समझेगा, तो वे दोनों अपने-आप बरबाद हो जायँगे। यह ज़हनियत हमारी गुलामीको कभी खत्म न होने देगी। अखीरमें, यह आदमीको अितना ओछा भी बना सकती है कि, अगर कभी मुमकिन हुआ, वह अपने गाँवकी आज़ादीको ही सबके अूपर समझने लगे। मैं असलमें यह चाहता हूँ कि हरअेक हिन्दुस्तानी अिस बातको समझ ले कि हिन्दुस्तानमें जहाँ कहीं बुरा काम किया जाय, अुससे हर दूसरे हिन्दुस्तानीका सम्बन्ध है। हरअेकको ज़ाती तौरपर अुसकी ज़िम्मेदारी अपनेपर लेनी चाहिये और ग़लतीको सुधारनेमें भागीदार बनना चाहिये। दूसरा कोअी रास्ता हमें पंजाबकी दर्दनाक वारदातोंकी तरफ़ ही ले जायगा।

"मेरे पास अैसे न्योते आये हैं जिनमें मुझसे यह कहा गया है कि मैं बिहारको जनताके नुमाअिन्दोंकी देख-रेखमें छोड़कर पंजाबमें फिर सुलह क़ायम करानेके लिअे रवाना हो जाअूँ। लेकिन मैं अितना दिखावटी नहीं हूँ कि हर जगह जाकर लोगोंकी सेवा करने लायक़ अपनेको मान लूँ। मैं तो अपने-आपको भगवान्‌के हाथोंका अेक छोटासा ज़रिया मानता हूँ। मेरी आशा यह है कि मैं बिहार और बंगालकी दोनों जातियोंमें शांति और मेलजोल क़ायम करनेका कोअी ज़रिया ढूँढ़ निकालूँ या मर जाअूँ। मैं यहाँसे तभी जा सकता हूँ, जब दोनों जातियाँ अेक-दूसरीकी दोस्त बन जायँगी और मेरी सेवाकी अुन्हें ज़रूरत न रहेगी। मेरे पंजाब न जा सकनेके बावजूद, मुझे आशा है कि मेरी आवाज़ अुस सूबेके हिन्दुओं, मुसलमानों और सिक्खों तक पहुँचेगी और वे अपने आजके बेवकूफ़ी भरे जंगलीपनको छोड़नेकी कोशिश करेंगे।

"मैं मुक़ामी गाँववालोंसे बिनती करता हूँ कि वे मुस्लिम घरोंसे लूटी हुअी सारी जायदाद लौटा दें। आपकी शरारतकी वजहसे जो मलवा जमा हो गया है, अुसे आपको साफ़ कर देना चाहिये और अैसा वातावरण पैदा करना चाहिये कि आपके मुसलमान पड़ोसी जल्दी ही सलामतीके साथ अपने घरोंको लौट आवें। आज मैं जिस गाँवमें गया था, वह बहुत गन्दा है। मैं चाहता हूँ कि सारे गाँववाले अपनी मरज़ीसे गाँवकी सफ़ाअी करें, रास्तोंको सुधारें, गड्ढे पूरें और अुनकी जगह गाँववालोंके मनबहलावके लिअे बगीचे खड़े करें। थोड़ेमें, वे गोबर और कूड़े-करकटके ढेरोंको शान्ति और सुखके घरोंमें बदल दें। आप कम-से-कम अुन्हीं गाँवोंसे अपना काम शुरू करें, जिन्हें आपने अपने मुसलमान भाअियोंके खिलाफ़ गुस्सेसे पागल होकर बरबाद कर दिया है।"

१४-३-'४७

खुसरुपुर अेक छोटा क़सबा है जहाँके हिन्दुओंसे ज़्यादा खुशहाल मुसलमानों पर बहुतोंने मिलकर ज़ोरदार हमला किया था। प्रार्थना-मैदानमें आनेके पहले गांधीजीने अैसे कअी बरबाद किये गये घरोंको देखा। अुन्होंने प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें लोगोंसे कहा — "आप लोगोंसे मेरी यह बिनती है कि आप मेरी बातें सिर्फ़ सुनें ही नहीं, बल्कि अुन्हें दिलमें भी अुतार लें। बिहारी हिन्दुओं और मुसलमानोंमें पहले जो प्रेम और भाअीचारा मौजूद था, अुसे फिर क़ायम करनेके लिअे ही मैं यहाँ आया हूँ। अैसा होगा, तभी आपके बारेमें यह कहा जा सकेगा कि आप न सिर्फ़ भाअियों जैसे रहते हैं, बल्कि सचमुच अेक-दूसरेके भाअी-बहन बनकर रहते हैं। कभी-कभी आपमें मतभेद पैदा हुआ होगा, लड़ाअी-झगड़े भी हुअे होंगे, लेकिन आजकी तरह दिलोंको तोड़ देनेवाली हालत कभी पैदा न हुअी थी। यहाँ अैसी-अैसी दर्दनाक वारदातें हुअी हैं जिनका बयान करना भी मेरे लिअे मुश्किल है। लेकिन अब मैं यही चाहता हूँ कि आप अैसी वारदातोंको भूल जायँ और आजके अपने फ़र्ज़पर विचार करें।

"आज देशके सामने दो ही रास्ते हैं — अेक, घूँसेके बदले घूँसेका रास्ता, जो पंजाबने पकड़ा मालूम होता है; दूसरा, खालिस अहिंसाका। हो सकता है कि हिंसाके ज़रिये सूबेमें ज़बरन किसी तरहकी शान्ति क़ायम हो जाय। मैं आशा करता हूँ — हालाँकि विश्वासके साथ यह कभी नहीं कहा जा सकता — कि १८५७ की तरह यह बुराअी सारे हिन्दुस्तानमें नहीं फैलेगी। जैसा कि हम जानते हैं, सत्तावनके गदरमें भी अिस तरहकी बातें हुअी थीं, जब बेहतर हथियारोंसे अुसे दबाया गया था। बाहरसे चारों तरफ़ शान्ति दिखाअी देने लगी थी, लेकिन लादी गअी हुकूमतके खिलाफ़ नफ़रतने गहरी जड़ जमाली थी। नतीजा यह हुआ कि अुस वक़्त जैसा बोया गया वैसा हम आज भी काट रहे हैं। अीस्ट अिण्डिया कम्पनीकी जगह ब्रिटिश सरकारने ले ली। अुसने स्कूल और क़ानूनी अदालतें क़ायम कीं और हिन्दुस्तानियोंने बड़ी अुमंगके साथ अुन्हें अपनाया। अुन्होंने पच्छिमी तहज़ीबको फैलानेमें भी सहयोग दिया। लेकिन अिन सबके बावजूद वे सियासी गुलामीके अपमान या बेअिज़्ज़तीको नहीं सह सके। अुसी तरह लेकिन बदतर तरीक़ेसे, अगर सूबेके लोगोंके खिलाफ़ बेहतर हथियारोंका अिस्तेमाल करनेसे पंजाबमें शान्ति क़ायम हुअी, तो वहाँके भाअी-बहन जैसे हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीचके आजके झगड़े और दुश्मनी और भी ज़्यादा गहरी जड़ जमा लेंगे।"

गांधीजीने आगे कहा — "अिस तरह हिंसा कभी जवाबी हिंसासे खत्म नहीं की जा सकती। अुसे खत्म करनेका दूसरा कारगर रास्ता अहिंसाका ही हो सकता है। बिहारने सन् १९१७ में अिसकी तालीम चम्पारनमें ली थी। लेकिन अितने अरसेके बाद आज शायद मैं यह कह सकता हूँ कि अुस वक़्त नीलकी खेती करनेवाले अंग्रेज़ोंके खिलाफ़ अहिंसक असहयोग करनेवाले किसानोंकी अहिंसा कमज़ोरोंकी अहिंसा थी। अब, जब कि हिन्दुस्तानी आपसमें हिंसाके ज़रिये लड़ रहे हैं, अैसी अहिंसासे काम नहीं चल सकता। आज तो बहादुरों और ताक़तवरोंकी अहिंसा ही क़ारगर साबित हो सकती है।

"अिसके लिअे सबसे पहले सच्चे पछतावेकी ज़रूरत है। यह पछतावा बहादुरी दिखानेके लिअे नहीं, बल्कि अिस सच्ची भावनाके साथ किया जाय कि हमारे थोड़े वक़्तके पागलपनसे जिन लोगोंको नुक़सान पहुँचा है, अुनके साथ न्याय किया जाना चाहिये। मैं चाहता हूँ कि आपमें से कोअी मेरे ज़ाती प्रभाव या मेरी पिछली सेवाओंका ख़्याल करके अैसा न करें। आप सब शान्ति और पूरी नातरफ़दारीके साथ अिस बारेमें सोचें, और अगर अहिंसाका रास्ता आपके दिल और दिमाग़को जँचे, तो आप अपने मुसलमान भाअियोंको पहुँचाये गये नुक़सानका मुआवज़ा देनेके लिअे आगे आवें।

"सूबा-मुस्लिम लीगके सेक्रेटरी मेहरबानी करके मेरे पास आये थे। अुन्होंने यह शिकायत की: 'हालाँकि सरकारने मुसलमानोंको वापस लानेका अिन्तज़ाम कर दिया है, मगर हिन्दुओंका रुख अभी पूरी तरह बदला नहीं है।' मैं मज़बूतीके साथ आपसे कहता हूँ कि आप सचाअीको देखें। हममें से हरअेक दुश्मनीकी भावनाको जड़से मिटाने की जमकर कोशिश करे और अपने मुसलमान पड़ोसीके फिरसे भाअीचारेके साथ रहने लायक़ हवा पैदा करे।"

गांधीजीने आगे कहा — "अगर बिहारके हिन्दू अीमानदारीसे अैसा महसूस नहीं करते और यह सोचते हैं कि आजकी चुनौतीका मुनासिब जवाब सिर्फ़ हिंसासे ही दिया जा सकता है, तो अैसा वे सचाअीके साथ साफ़-साफ़ कह दें। अिस सचाअीसे मुझे कोअी चोट नहीं लगेगी। लेकिन मैं अहिंसाकी अैसी हारका दिन देखनेके लिअे ज़िन्दा रहनेके बजाय मर जाना ज़्यादा पसन्द करूँगा। अिसकी मुझे कोअी परवाह नहीं कि अपने अितने दिनोंके पाले-पोसे हुअे आदर्शको हासिल करनेके लिअे मैं कहाँ मरूँगा — हिन्दुस्तानकी हर जगह मेरे लिअे हिन्दुस्तान ही होगी। लेकिन आज भी मुझे यह आशा है कि आखिरमें अहिंसाकी ज़रूर जीत होगी। क्योंकि आज बिहार अहिंसाकी जो मिसाल पेश करेगा, अुसीमें हमारे दुखी देशकी शान्ति और तरक़्क़ीकी आशा छिपी हुअी है।"

१५-३-'४७

प्रार्थनासे अेक घण्टा पहले गांधीजी गवर्नरसे मिलने गये थे। वहाँसे वे प्रार्थना-मैदानमें पाँच मिनट देरसे पहुँचे। अपने भाषणके शुरूमें अुन्होंने अिस मुलाक़ातका ज़िक्र करते हुए कहा — "लोग क़ुदरती तौरपर यह जानना चाहेंगे कि मैं वहाँ क्यों गया था। मेरे लिए यह ग़ैरसरकारी मुलाक़ात थी, क्योंकि पहलेकी तरह आज भी मैं गवर्नरके पास किसी मेहरबानी या सेवाकी आशासे नहीं जा सकता। आपकी ज़िम्मेदाराना सरकारके मातहत मैं सिर्फ़ जनताके नुमाअिन्दे वज़ीरोंसे ही मेहरबानी या सेवाकी आशा कर सकता हूँ। बेशक गवर्नरके पास कम तादादवाले लोगोंसे ताल्लुक़ रखनेवाले अधिकार हैं, लेकिन अुनका अिस्तेमाल वे बड़ी पाबन्दीके साथ ही कर सकते हैं। मेरे साथ हुअी बातचीतकी सूचना वे अपने वज़ीरोंको देंगे। फिर भी अेक बात मैं आपसे कह सकता हूँ। मुझे गवर्नरकी अेक बात सुनकर ताज्जुब हुआ। अुन्होंने कहा कि जो लोग जनताके प्रति जिम्मेदार हैं, अुन्हें अपनेसे ही काम शुरू करना होगा। अगर वे जाती ज़िन्दगीसे कोअी चीज़ शुरू नहीं करते और अपनेको दूसरोंसे ज़्यादा ऊँचे मानते हैं, तो वे जनताके सच्चे सुधारक या सेवक नहीं बन सकते।

"आप लोगोंको भी यह ख़्याल छोड़ देना चाहिये कि हमने अंग्रेज़ोंसे कोअी सत्ता छीन ली है। अहिंसक असहयोगमें अिस तरहके ख़्यालकी कोअी जगह नहीं है। हमने जो कुछ किया, अपना फ़र्ज़ समझकर किया है। बेशक अिसका नतीजा यह हुआ है कि अंग्रेज़ोंने क़ुदरती तौरपर और ख़ुद होकर अपनी बहुतसी सत्ता और अधिकार छोड़ दिये हैं। अगर हम लोगोंमें और लोगोंके लिअे पूरी सत्ता चाहते हैं तो हमें अहिंसक तरीक़ेसे अपना फ़र्ज़ अदा करना चाहिये। बिहारकी पिछली घटनायें अिस सही रास्तेसे बहुत दूर जा पड़ी थीं। अगर सबाअीको नहीं पहचाना गया और पंजाबकी छूत फैली, तो मुझे अिसमें ज़रा भी शक नहीं कि जो चीज़ हमारी पकड़में आ गअी है अुसे भी हम खो बैठेंगे। अिसीलिअे मैं बिहारसे यह आशा रखता हूँ कि वह हक़ीक़तको पहचानेगा और अिज़्ज़त व क़ाबलीयतके साथ अपना फ़र्ज़ अदा करेगा।"

अिसके बाद गांधीजीने पड़ोसके गाँवोंके तीन छोटे मुआअिनोंके तजरबे बयान किये। अुन्होंने कहा — "मुझे यहु देखकर बड़ा अफ़सोस हुआ कि वहाँके मकान आज भी अुसी हालतमें पड़े हुअे हैं, जिसमें अुनको दंगाअियोंने छोड़ा था। अगर आप अपने मुसलमान भाअियोंको वापिस बुलाना चाहते हैं, तो यह ज़रूरी है कि आप गाँवोंमें पहलेकी हालत फिर पैदा करें और वहाँके मलबेको पूरी तरह साफ़ कर दें। हर आदमी, जो यह महसूस करता है कि बेआसरा लोगोंकी वापसीको सुगम बनाना अुसका फ़र्ज़ है, जल्द ही टूटे हुअे घरोंको फिरसे रहने लायक़ बनानेके काममें हाथ बँटा सकता है।"

अिसके बाद गांधीजीने राहत-फण्डमें दान देनेके लिअे चल रही गाँववालोंकी अुम्दा होड़का ज़िक्र किया। अुन्होंने कहा — "मिक़दारमें यह चन्दा भले बाँकीपुरके लोगोंकी साखको न पहुँच पाया हो, लेकिन मिक़दारकी कमी चन्देके गुणोंसे पूरी हो गअी है। क्योंकि गाँवोंका ज़्यादातर चन्दा बहुत छोटी रक़मोंका है।"

अिसके बाद गांधीजीने सभामें आये हुअे लोगोंसे कहा — "आज दिनमें मेरे पास अैसे कअी मुसलमान भाअी आये थे, जिन्हें दंगेमें नुक़सान पहुँचा है। मैंने आपकी तरफ़से अुन्हें यह यक़ीन दिलाया है कि बिहारमें हालकी दर्दनाक घटनाओंका दुहराया जाना नामुमकिन है। मैंने अेक फूलने-फलनेवाले मुस्लिम व्योपारीको अिस बातका यक़ीन दिलाया है कि आपको पूरे विश्वासके साथ अपना व्योपार फिर शुरू करनेमें किसी तरहका डर नहीं रखना चाहिये, क्योंकि मुझे विश्वास है कि बिहारी हिन्दू अपने वचनका पालन करेगा।"

१७-३-'४७

सरकारी अन्दाज़के मुताबिक़ मसौढ़ीकी भीड़ ३० हज़ारसे ज़्यादा थी। सभामें आये हुअे मर्द और औरतोंमें से बहुतोंने रामधुन गाअी। गांधीजीने अिसके लिअे लोगोंको मुबारकबाद देते हुअे कहा — "यह बिहारका सफ़र सिर्फ़ तक़रीरके लिअे नहीं किया गया है, बल्कि अिसके सबब बड़े अहम और गंभीर हैं। मैं अुन जगहोंको देखूँगा जहाँ मुसलमानोंका नुक़सान हुआ है। हिन्दुओंसे मेरी अपील है कि वे मुनासिब और अच्छे काम करके प्रायश्चित्त करें।

"नवम्बरके पागल बना देनेवाले दिनोंमें बच्चों और औरतोंको बेदर्दीसे क़त्ल किया गया। साथ ही, मर्दोंको भी अितनी बड़ी तादादमें मारा गया कि नोआखालीके काफ़ी गंभीर क़िस्मके वाक़यात भी फीके पड़ गये। मैं बिहारके हिन्दुओंसे अुम्मीद करता हूँ कि वे सिर्फ़ मेरे नामकी 'जय' ही नहीं पुकारेंगे, बल्कि सच्चा पछतावा भी ज़ाहिर करेंगे। मुझे न सिर्फ़ यह आशा है कि आप लोग खुले दिलसे राहत-फण्डमें चन्दा देंगे, बल्कि अिससे भी ज़्यादा आशा अिस बात की है कि आप लोग सताये हुअे लोगोंके सामने अपनी ग़लतियोंका अिक़रार करेंगे। अिसीसे मुझे सच्ची शान्ति मिल सकेगी।

"मैंने अलग-अलग ज़रियोंसे वाक़यातकी रिपोर्टें माँगी हैं। अुनमें से अेकमें बताया गया है कि झगड़ेकी शुरूआत मुसलमानोंकी तरफ़से हुअी। मुझे अिस बातसे कोअी ताल्लुक़ नहीं कि झगड़ा दरअसल कैसे शुरू हुआ। सवाल यह है कि अितनी ज़्यादा तादादवाले हिन्दू किस तरह अितने नीचे गिर गअे कि बेगुनाहोंको क़त्ल कर सके। सच्चा पछतावा और हरजाना पूरा करनेवाले काम ही हिन्दुओं और मुसलमानोंमें हमेशा बनी रहनेवाली शान्ति क़ायम कर सकते हैं।

"अिस रिपोर्टमें सरकारपर भी मुसलमानोंके हाथों हिन्दुओंके नुक़सानकी तरफ़ लापरवाही दिखानेका अिलज़ाम लगाया गया है। अिसी तरहकी शिकायतें मुसलमानोंकी तरफ़से भी आअी हैं कि सरकार अुनकी शिकायतोंपर ध्यान नहीं देती। मैं बहुत जल्द अिन दोनों रिपोर्टोंपर अेतबार नहीं करूँगा। अेक लोक-प्रिय सरकार, जो किसी जातिकी तरफ़ लापरवाही या जानिबदारी दिखाती है, ज़्यादा दिनों तक टिक नहीं सकती। सरकार यह अैलान कर चुकी है कि वह ग़ैर-जानिबदार (निष्पक्ष) कमीशन मुक़र्रर करेगी, जो तमाम शिकायतोंको सुनेगा, पिछले ख़ौफनाक झगड़ेकी वजह मालूम करेगा और अैसे तरीक़े और साधन खोजेगा, जिससे अैसी दर्दभरी घटना फिर न हो सके। वह नुक़सान अुठानेवालोंको मुनासिब हरजाना देनेके बारेमें भी अपनी राय देगा। जिन लोगोंने मेरे पास ख़त भेजे हैं, अुन्हें कमीशनके सामने गवाही देनेके लिअे तैयार रहना चाहिये। मेरा रास्ता जज या वकीलका नहीं है। मेरा मामूली काम तो अेक सुधारक और अिनसानोंका भला करनेवालेका है। अिसलिअे मैं ज़ाहिर बातोंसे ही ताल्लुक़ रखूँगा और क़सूरवार लोगोंसे अपनी ग़लतियोंके लिअे प्रायश्चित्त करनेको कहूँगा।"

(अंग्रेज़ीसे)

नअी किताबें

	मूल्य	डाकख़र्च
जीवनका काव्य — हमारे त्योहारोंका परिमल (काका कालेलकर)	२-०-०	०-५-०
हमारी बा — अुनकी जीवन-कस्तूरी (वनमाला परीख और सुशीला नय्यर)	२-०-०	०-६-०

विषय-सूची

		पृष्ठ
मछलीगिरी — अेक बुनियादी दस्तकारी	... अेच० अेम० गांजरेकर	७३
गांधीजीकी बिहार-यात्राकी डायरी		७४
अेक और शानदार क़दम	... जे० सी० कुमारप्पा	७५
नया मैदान, नये रास्ते	... जे० सी० कुमारप्पा	७६
रेडियोकी भाषा-नीति		७६